आवश्यक निवेदन

प्रस्तुत अध्ययन सामग्री, तालिकाएँ एवं चित्र आदि श्रीमती सारिका विकास छाबड़ा द्वारा तैयार किये गए हैं | इनका अन्यत्र एवं अन्य भाषा में उपयोग करने के पूर्व उनसे अनिवार्यतः संपर्क कर लें |

संज्ञा प्ररूपणा

संज्ञा क्या है?

इह जाहि बाहिया वि य, जीवा पावंति दारुणं दुक्खं।
सेवंता वि य उभये, ताओ चत्तारि सण्णाओ॥134॥

अर्थ: जिनसे संक्लेशित होकर जीव इस लोक में और
जिनके विषय का सेवन करने से दोनों ही भवों में दारुण दुःख को प्राप्त होते हैं उनको संज्ञा कहते हैं।
उसके विषय-भेद के अनुसार चार भेद हैं - आहार, भय, मैथुन और परिग्रह
॥134॥

संज्ञा के अन्य नाम

संज्ञा

वांछा

इच्छा

अभिलाषा

Desire

चार संज्ञाएँ

आहार

आहार (खाने-पीने आदि) की इच्छा

भय

भय से उत्पन्न हुई भागने की इच्छा

मैथुन

मैथुन अर्थात् कामसेवनरूप मिथुन कर्म की इच्छा

परिग्रह

पदार्थों को ग्रहण करने की इच्छा

आहार संज्ञा उत्पन्न होने के कारण

आहारदंसणेण य, तस्सुवजोगेण ओमकोठाए।
सादिदरुदीरणाए, हवदि हु आहारसण्णा हु॥135॥

- अर्थः विशिष्ट अन्न आदि 4 प्रकार के आहार के देखने से
- उसके स्मरण से
- पेट के खाली होने से – इन बाह्य कारणों से और
- असाता वेदनीय की उदीरणा या तीव्र उदयरूप अन्तरंग कारणों से
- आहार संज्ञा होती है ।

आहार संज्ञा के कारण

बहिरंग कारण

- आहार को देखना
- आहार का स्मरण
- पेट का खाली होना

अंतरंग कारण

- असाता वेदनीय कर्म का तीव्र उदय या उदीरणा

आहार को देखना

देखना याने जानना अर्थात्

स्पर्शन इन्द्रिय से जानना

रसना इन्द्रिय से जानना

घ्राण इन्द्रिय से जानना

चक्षु इन्द्रिय से जानना

कर्ण इन्द्रिय से जानना

आहार का स्मरण

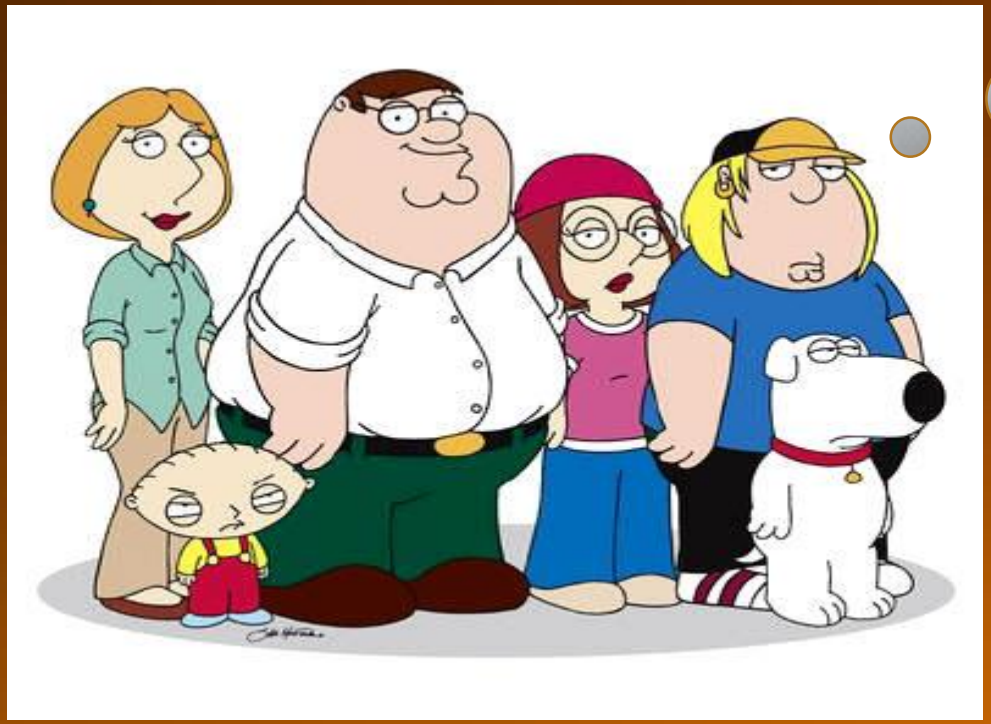

याने मन के द्वारा आहार का देखना

अइभीमदंसणेण य, तस्सुवजोगेण ओमसत्तीए।
भयकम्मुदीरणाए, भयसण्णा जायदे चदुहिं॥136॥

- अति भयंकर व्याघ्र आदि या क्रूर मृगादि के देखने से, उसकी कथा सुनने से,
- उनका स्मरण करना इत्यादि उपयोग से और
- शक्ति की कमी – इन बाह्य कारणों से और
- भय नामक नोकषाय के तीव्र उदयरूप अन्तरंग कारण से भय संज्ञा उत्पन्न होती है ।

भय संज्ञा उत्पन्न होने के कारण

बाह्य कारण

अति भयंकर व्याघ्र आदि या क्रूर मृगादि के देखने से, उसकी कथा सुनना,

भयकारी पदार्थ, घटना का स्मरण करना

अन्तरंग कारण

शक्ति की कमी

भय नामक नोकषाय का तीव्र उदय

पणिदरसभोयणेण य, तस्सुवजोगे कुसीलसेवाए।
वेदस्सुदीरणाए, मेहुणसण्णा हवदि एवं॥137॥

- कामोत्पादक पौष्टिक भोजन करने से,
- कामकथा के सुनने से ,
- अनुभूत काम विषय का स्मरण आदि उपयोग से,
- दुराचारी वेश्यागामी कामी पुरुषों की संगति गोष्ठी से, इन बाह्य कारणों से तथा
- स्त्री-वेद, पुरुष-वेद, नपुंसक-वेद में से किसी एक वेदरूप नोकषाय की उदीरणा-रूप अन्तरंग कारण से मैथुन संज्ञा उत्पन्न होती है।

मैथुन संज्ञा उत्पन्न होने के कारण

बाह्य कारण

- कामोत्पादक पौष्टिक भोजन करना
- कामकथा का सुनना
- अनुभूत काम विषय का स्मरण करना
- दुराचारी, वेश्यागामी, कामी पुरुषों की संगति

अन्तरंग कारण

- स्त्रीवेद, पुरुषवेद, अथवा नपुंसक वेद नोकषाय की उदीरणा से

उवयरणदंसणेण य, तस्सुवजोगेण मुच्छिदाए य।
लोहस्सुदीरणाए, परिग्गहे जायदे सण्णा॥138॥

- अर्थ - इत्र, भोजन, उत्तम वस्त्र, स्त्री, धन, धान्य आदि भोगोपभोग के साधनभूत बाह्य पदार्थों के देखने से अथवा
- पहले के भुक्त पदार्थों का स्मरण या उनकी कथा का श्रवण आदि करने से और
- ममत्व परिणामों के - परिग्रहाद्यर्जन की तीव्र आसक्ति के भाव होने से एवं
- लोभकर्म का तीव्र उदय या उदीरणा होने से – इन चार कारणों से परिग्रह संज्ञा उत्पन्न होती है ॥138॥

परिग्रह संज्ञा उत्पन्न होने के कारण

बाह्य कारण

अन्तरंग कारण

- इत्र, भोजन, उत्तम वस्त्र आदि भोगोपभोग के साधनभूत बाह्य पदार्थों को देखना
- पहले के भुक्त पदार्थों का स्मरण
- उनकी कथा का श्रवण आदि करना
- परिग्रह आदि के उपार्जन की आसक्ति के भाव
- लोभ कषाय की उदीरणा

णट्ठुपमाए पढमा, सण्णा ण हि तत्थ कारणाभावा।
सेसा कम्मत्थित्तेणवयारेणत्थि ण हि कज्जे॥139॥

- अर्थ - अप्रमत्त आदि गुणस्थानों में आहारसंज्ञा नहीं होती क्योंकि वहाँ पर उसका कारण असाता वेदनीय का तीव्र उदय या उदीरणा नहीं पाई जाती।
- शेष तीन संज्ञाएँ भी वहाँ पर उपचार से ही होती हैं क्योंकि उनका कारण उन-उन कर्मों का उदय वहाँ पर पाया जाता है फिर भी उनका वहाँ पर कार्य नहीं हुआ करता ॥139॥

संज्ञाओं के स्वामी

गुणस्थान	आहार संज्ञा	भय संज्ञा	मैथुन संज्ञा	परिग्रह संज्ञा
1 - 6	✓	✓	✓	✓
7 – 8	×	✓	✓	✓
9	×	×	✓	✓
10	×	×	×	✓
11 – 14	×	×	×	×

क्या संसारी जीव को प्रत्येक संज्ञा हरसमय चलती रहती है? नहीं

क्या संसारी जीव को हर समय कम-से-कम एक संज्ञा तो होगी ही?

यह जरुरी नहीं है

संज्ञा और संज्ञा के विषय सेवन में अंतर ?

- Reference : श्री गोम्मटसार जीवकाण्डजी, संज्ञा प्ररूपणा

- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact

  - sarikam.j@gmail.com
  - ☎: 0731-2410880